

## निशार

## निशीथि

## निश्वला

निशातः, त्रि, (नि+शो निशाने+क्तः। "शास्त्रो-  
रन्तरस्याम्।" ७। ४। ४१। इति पञ्चे  
रत्वाभावः।) शाशितः। इति हेमचन्द्रः।  
निशादः, पुं, (निशायां अतिभयवतीति। अद्+  
अच्।) निशादः। इत्यमरटीकायां रमानाथः।  
नि, निशासकः।  
निशादिः, स्त्री, (निशाया आदिर्येच।) यन्वा।  
इति राजनिर्घण्टः।  
निशान्तं, स्त्री, (निशान्ते विश्रान्तेऽस्मिन्निति।  
नि+श्रम+अधिकारणे क्तः।) यद्दम्। इत्य-  
मरः। २। २। ५। (यथा, रघुः। १६। ४०।  
"तस्याः स राजोपपदं निशान्तं  
कामीव कान्ताहृद्यं प्रविश ॥"  
निशाया अन्तो यञ।) उवा। (यथा, मनुः। ४। ६। ६।  
"न निशान्ते परिश्रान्ते ब्रह्माधौत्व पुनः  
खपेत् ॥")  
शान्ते, त्रि। इति मेदिनी। ते, १। १६।  
निशाया, स्त्री, (निशायां अन्वयति उपसंहरति  
आत्मानमिति। अन्व उपसंहारे+अच्+  
टाप्।) जतुकान्ता। इति राजनिर्घण्टः।  
(निशायां अन्वः।) राचाश्वे, त्रि।  
निशापतिः, पुं, (निशायाः पतिः।) चन्द्रः।  
(यथा, सूयविह्वान्ते। २। ४७।  
"समन्वसुक्तिसंयुतो मध्यसुक्तिर्निशापतेः।  
दोष्यान्तरादिकं कृत्वा सुक्ताह्वयनं भवेत् ॥")  
कर्पूरः। इत्यमरः। (निशायामेव पतिरिति  
विग्रहे कचित् अङ्गनाश्रमा उपपतिरपि।  
यथा, आर्थाश्रयश्रामम्। ३। ५२।  
"शाङ्गकोशेऽपि निशापतिः स तापं सुधा-  
मयो हरति।  
यदि मां रजनिष्वर इव सखि। स न निव-  
बद्धि गेहपतिः ॥")  
निशापुर्ण, स्त्री, (निशायां रात्रौ पुष्यति विक-  
सतीति। पुष्य विकासे+अच्।) उत्पलम्।  
इति राजनिर्घण्टः।  
निशावनः, पुं, (निशायां रात्रौ वनं यस्य।)  
मेघट्टमिपुनककैटपडुर्मकरराश्रयः। इति  
श्रुतिषम्।  
निशाभङ्गा, स्त्री, (निशा हरिद्रा लङ्गु भङ्गो  
यस्याः।) दुग्धपुष्पी। इति शब्दचन्द्रिका।  
दुग्धपेया इति भाषा।  
निशामन्त्रिः, पुं, (निशाया मन्त्रिणः।) चन्द्रः।  
इति त्रिकाण्डशेषः।  
निशामनं, स्त्री, (नि+श्रम+ञिप्+क्युट्।)  
दर्शनम्। आलोचनम्। इति मेदिनी। ते,  
१६०। अथवा। इति हेमचन्द्रः। ३। २४०।  
निशाङ्गः, पुं, (निशाचरो ऋगः पशुः।)  
श्रमानः। इति शब्दरत्नावली।  
निशाचकं, स्त्री, (नि+श्र मि हिंसे+ञिप्+  
क्युट्।) भारवम्। इत्यमरः। २। ८। ११२।  
(निशाया रवम्।) रात्रियुद्धम्। (निशाया  
रवः शब्दः।) रात्रिशब्दे, पुं।

निशाचकं, स्त्री, (निशाया निशायां वा रजनिव।)  
चन्द्रः। इति हेमचन्द्रः। १। २। १६।  
निशाचकः, पुं, रूपकभेदः। यथा,—  
"दृष्टः प्रौढोऽथ खचरो विभवश्चतुरङ्गमः।  
निशाचकः प्रतितालः कथिताः सप्त रूपाः ॥"  
तस्य लक्षणं यथा,—  
"लघुहृन्द्ं गुरुहृन्द्ं तस्यासतालकः स्मृतः।  
चतुर्विंशतिवर्गस्तु रसे हास्ये निशाचकः ॥"  
तालविशेषः। यथा,—  
"प्रविश्य नर्तको रङ्गं विकीर्यं कुसुमादिकम्।  
निशाचकेऽथ तालेन कोमलं श्रुत्वाचरेत् ॥"  
इति सङ्गीतदासोदरः।  
निशावनः, पुं, (निशावत् अन्वकारजनकं वनं  
यत्र।) श्रवः। इति राजनिर्घण्टः।  
निशाहृन्द्ं, स्त्री, (निशानां हृन्द्ं वन्धः।)  
रात्रिगन्धः। बहुनिशाः। इति शब्दरत्नावली।  
निशावेदी, [ नृ ] पुं, (निशां निशापरिमाणं वेत्ति  
वेदयति वा। विद् वा वेद+ञिणिः।) कुक्कुटः।  
इति हेमचन्द्रः। ४। ३६०।  
निशाहवः, पुं, (निशायां रात्रौ हवो हावो  
विकावो यस्य।) कुसुदम्। इति त्रिकाण्डशेषः।  
निशाङ्गा, स्त्री, (निशाया आङ्गा आस्ता आङ्गा  
यस्याः।) हरिद्रा। इत्यमरः। २। ६। ४१।  
निशितं, स्त्री, (नि+शो+क्तः। "शास्त्रो-  
रन्तरस्याम्।" ७। ४। ४१। इति इत्यम्।)  
कौहम्। इति राजनिर्घण्टः।  
निशितः, त्रि, (नि+शो+क्तः।) शाशितः।  
इत्यमरः। ३। १। ६१। (यथा, महाभारते।  
१। १२४। ६५।  
"तद्वाक्त्रसमकालम् वीभस्तुर्निशितैः शरैः।  
अवायैः पञ्चभिर्गार्हं मयसम्भस्यताडयत् ॥")  
निशियुष्वा, स्त्री, (निशि युष्यति विकाशते इति।  
युष्य+अच्। टाप्।) श्रेफालिका। इति  
त्रिकाण्डशेषः।  
निशियुष्विका, स्त्री, (निशियुष्वा+स्वार्थं कर्त्।)  
श्रेफालिका। इति शब्दरत्नावली।  
निशियुष्वी, स्त्री, श्रेफालिका। निशि रात्रौ विक-  
शितं पुष्पमस्या इति युत्पत्तौ मध्यपदलोपः  
सप्तम्या अलुक् च ततो चातिरत इति ईप्।  
निशीथः, (नितरां श्रेतेरनेति। नि+शी+  
"निशीथगोपीथावगयाः।" उवा। २। ६।  
इति शकप्रबन्धेन निपातनानु चायुः।) अर्ह-  
रात्रः। इत्यमरः। १। ४। ६। (यथा,  
रघुः। ३। १५।  
"निशीथदीपाः सहसा हतलिषो  
नभूरुवावेत्यसमर्पिता इव ॥")  
रात्रिमात्रम्। इति मेदिनी। ये, २०। (यथा,  
अनुसंहारे। १। ३।  
"सुतस्त्रीगीतं भद्रस्य दीपनं  
युचौ निशीथेऽनुभवन्ति कामिनः ॥")  
निशीथिनी, स्त्री, (निशीथेऽनुभवन्ति इति।  
इतिः। स्त्रीप्।) रात्रिः। इत्यमरः। १। ४। ४।

निशीथिनीनाथः, पुं, (निशीथिना नाथः।)  
चन्द्रः। इति हलायुधः।  
निशीथ्या, स्त्री, रात्रिः। इति श्रुतिप्रयोगः।  
निशुम्भः, पुं, (नि+शुम्भ हिंसायाम्+भावे  
ञच्।) वधः। इति हेमचन्द्रः। ३। ३६३।  
दानवविशेषः। यथा,—  
"कश्यपस्य दनुर्नाम भार्याचीरिजसत्तमः।  
तस्यास्तु द्वौ सुतावास्तां सहसाचाहवाधिकौ।  
श्वेदः शुम्भ इति ख्यातो निशुम्भश्चापरासुरः।  
द्वितीयो ननुचिर्नाम महाबलसम्पन्नितः ॥"  
इति वानपुत्रपुराणे ५२ अध्यायः।  
(अथ हि भगवन्ना निहतः। इति मार्कण्डेय-  
पुराणम्। अपरोऽसुरविशेषः। यदुक्तं मार्क-  
ण्डेये। ६१। ३६—३७।  
"वेवस्वतेऽन्तरे प्राप्तेऽष्टाविंशति मे युगे।  
शुम्भो निशुम्भश्चेवाभ्यानुत्पत्स्येते महासुरौ।  
नन्दनेपयुजे जाता यशोदागर्भसम्भवा।  
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्वाचलनिवासीनौ ॥")  
निशुम्भं, स्त्री, (नि+शुम्भ हिंसायाम्+भावे  
क्युट्।) भारवम्। इति हलायुधः।  
निशुम्भगर्हिनी, स्त्री, (निशुम्भं मर्हयतीति। अद्  
+ञिणिः। स्त्रीप्।) दुर्गा। इति हेमचन्द्रः।  
निशुम्भशुम्भमथनी, स्त्री, (निशुम्भं शुम्भश्च मथा-  
तीति। मन्व विलोडने+ञ्युः। नलोपः। ततो  
स्त्रीप्।) दुर्गा। यथा, देवीपुराणे।  
"निशुम्भशुम्भमथनी देवी वेदेह गीयते ॥"  
निशुम्भी, [ नृ ] पुं, (निशुम्भो मोहनाशोऽन्व-  
स्येति। इतिः।) नृश्वविशेषः। तत्पण्यायः।  
शैरवः २ शैरवः ३ चक्रवर्णरः ४ देवः ५ वक्-  
त्रपाली ६ शशिशेखरः ७ वज्रटीकः ८ इति  
त्रिकाण्डशेषः।  
निशैतः, पुं, (निशायामपि एतं ईषदृगमनं यस्य।)  
वकः। इति त्रिकाण्डशेषः।  
निशयः, पुं, (निशोयतेऽनेनेति। निर्+चि+  
"अहहनिचिममच ॥" ३। ३। ५८। इति  
अप्।) निःशंशयज्ञानम्। तत्पण्यायः। निशयः  
२। इत्यमरः। १। ५। ३। निशयनम्  
निशयः ४। इति शब्दरत्नावली। (यथा, देवी-  
भागवते। १। १६। ३५।  
"देहोऽयं मम वन्धोऽयं न ममेति च सुकृता।  
तथा धनं यद्दं राण्यं न ममेति च निशयः ॥")  
"तद्भावा प्रकारा शौक्यप्रकारा तु निशयः ॥"  
इति भाषापरिच्छेदः।  
(अर्थालङ्कारविशेषः। तल्लक्षणादिकं यथा,  
वाङ्मयदर्पणे। १०। ५६।  
"अन्वयनिधिष्य प्रकृतस्यापनं निशयः पुनः ॥"  
उदाहरणं यथा,—  
"वदवमिदं न चरोजं नयमे नेन्द्रीवरे एते।  
इह सविधे सुभद्रश्री मधुकर। न सुधा परि-  
भाष्य ॥")  
निशका, स्त्री, (निशकतीति। निर्+चक+  
अच्। टाप्।) शालपर्णी। इति राजनिर्घण्टः।